बंदर एक-दूसरे को ऊष्मा का कुचालक बनाते हैं

यह तो सभी ने देखा है कि बंदर एक झुंड में बैठकर एक-दूसरे के बाल साफ करते रहते हैं। ऐसा करते हुए वे जो भी कीड़े-मकोड़े मिलें उन्हें खाते भी रहते हैं। जीव वैज्ञानिक मानते हैं कि इस तरह से बंदर स्वस्थ भी रहते हैं और उनमें सामाजिक रिश्ते प्रगाढ़ होते हैं। मगर अब परस्पर बाल संवारने का एक अनोखा फायदा पता चला है।

अमेरिकन जर्नल ऑफ प्रायमेटोलॉजी में प्रकाशित शोध पत्र के मुताबिक बालों को संवारने से बंदरों को अपने रोम आवरण को ऊष्मा का कुचालक बनाने में भी मदद मिल सकती है।

इस बात की जांच के लिए शोधकर्ताओं ने अच्छी तरह संवारे गए फर और साधारण फर की तुलना की। उन्होंने वर्वेट बंदरों (*क्लोरोसेबस पायजेरीथ्रस*) के कच्चे चमड़े लिए, जिन पर से बालों का आवरण हटाया नहीं गया था। अब उन्होंने कुछ फरों को सीधे और कुछ को उल्टी कंघी की, 50-50 बार। कुछ को वैसे ही छोड़ दिया गया। कंघी करने से फर थोड़ा मोटा हो जाता है - लगभग किसी रजाई के समान। उल्टी कंघी करने के बाद फर ज़्यादा फूलता है।

अब तीनों तरह के फरों पर प्रकाश डालकर वर्णक्रममापी की मदद से नापा कि कौन-सा फर कितना प्रकाश परावर्तित कर देता है। इसके आधार पर उन्होंने प्रत्येक किस्म के फर की कुचालकता ज्ञात की। उनकी गणना दर्शाती है कि कंघी करने के फलस्वरूप मोटा हो चुका फर बंदर के लिए 50 प्रतिशत बेहतर कुचालक का काम कर सकता है। यानी ऐसा फर बंदर को अपने शरीर का तापमान स्थिर बनाए रखने में मददगार होगा। ऐसे बंदर को अपने शरीर के तापमान के नियमन के लिए कम ऊर्जा खर्च करनी होगी जिसका उपयोग वह अन्य कार्यों के लिए कर सकेगा। यानी एक-दूसरे के बालों को साफ करना बंदरों के लिए ऊर्जा-बचत का एक उपाय है। ***(स्रोत फीचर्स)***